धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मई 2010

* *धर्म प्रचार का काम कौन लोग कर सकते हैं?*

* मनुष्य का परम लक्ष्य

* कृतघ्नता कितना बड़ा पाप!

* इतिहास का महत्व

* एक रुपये का महत्व

* ऐसे भी हैं इन्सान

* शुभ संग्राम

धर्म प्रचार का काम कौन लोग कर सकते हैं?

परम पू0 भगवान देवात्मा फरमाते हैं -

धर्म प्रचार का काम वही लोग कर सकते हैं, जो आत्मा के विषय में सत्य ज्ञान दे सकते हों और अधिकारी आत्माओं को किसी नीच गति से निकाल सकते हों और उन्हें उच्च गतियों में ढाल सकते हों। जो जन इस प्रकार का कोई अमली काम नहीं कर सकते, वह हमारे किस काम के कर्मचारी! जो दुकानदार कोई सौदा नहीं बेच सकता, वह किस काम का दुकानदार!! क्या तुमने कभी देखा है कि कोई शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अच्छी-अच्छी बातें सुना कर ही तृप्ति पा लेता हो, ऐसा शिक्षक शिक्षक कहलाने के योग्य नहीं। वही सच्चा शिक्षक है जो अपनी शिक्षा का कोई उच्च फल पैदा करके ही चैन पाता है। इसी प्रकार से क्या तुम्हारे सामने प्रचार का कोई उच्च लक्ष्य है? क्या तुम्हारे सामने यह आता है कि मैंने अमुक स्थान में यह नतीज़ा पैदा करके ही छोड़ना है, अमुक विषय में अवश्य सत्य ज्ञान देना है, अमुक नीच गति को अवश्य दूर करना है, अमुक उच्च भाव को अवश्य पैदा करना है? यदि ऐसा कोई लक्ष्य तुम्हारे सामने न हो, तो तुम्हारे उपदेश और तुम्हारी सभाएँ किस काम की? एक-एक किसान खेत में हल जोतता है और देखता है कि मैंने शाम एक इतना खेत काश्त कर लिया है। इसी प्रकार आया तुम भी कुछ नतीजा निकाल कर दिखा सकते हो? श्रीमान देवत्वसिंह जी जो प्रतिदिन रात को सोने से पहले आरती और देव स्तोत्र गान का साधन करने के भिन्न आत्मपरीक्षा करके देखा करते थे कि आज मेरी ज़िंदगी से क्या क्या भला काम हुआ? मैंने जिस भले काम के लिए अपनी ज़िंदगी को भेंट किया हुआ है, वह काम मेरी ज़िंदगी से कहां तक हुआ। यदि इस विषय में उनको कोई घाटा नज़र आता था, तो उससे वह दु:खी होते थे।

हमने सेवकों और कर्मचारियों की दोबारा छानबीन करने में सैंकड़ों सेवकों को सेवकी के अयोग्य समझकर उनसे अलग कर दिया है। कितने कर्मचारियों की निर्वाहवृत्ति अहितकर जान कर बंद कर दी। अब जो लोग कोई निर्वाहवृत्ति न ले कर प्रचार का काम करते हैं, वह भी यदि अपने प्रचार का कोई उच्च फल न निकाल सकें, तो फिर हमें ऐसे कर्मचारियों की कोई आवश्यकता नहीं। जैसे एक एक किसान ऐसा सांझी चाहता है, जो सचमुच खेत में हल जोत कर कोई नतीजा पैदा कर सके, वैसे ही ऐसे कर्मचारी चाहिए जो सचमुच अधिकारी आत्माओं को सत्य ज्ञान दे सकें और उनका कल्याण कर सकें। हमने कहीं काबुल में जाकर कोई लड़ाई नहीं करनी कि जिस में हमें डर हो कि यदि थोड़े आदमी हुए तो पराजय हो जाएगी। हमनें तो मनुष्यों का भला करना है, इसलिए हमें तो वह जन चाहिएं, जो आत्मा के विचार से अच्छी पूंजी वाले हों। हम किसी मोह बन्धन की बिना पर किसी कर्मचारी या अन्य सम्बन्धी से बन्धे नहीं हैं। हमें सत्य और शुभ को छोड़कर किसी जन की भी कोई परवाह नहीं है। हम किसी जन के साथ कोई पक्षपात नहीं कर सकते। हम तो सचाई और भलाई के अनुरागी हैं, इन अनुरागों को लेकर कोई जन रहता हो तो रह जाए, कोई जाता हो तो चला जाए।

शेष पेज 20 पर

धर्म जीवन

खण्ड 23 अंक 5

मई 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य का परम लक्ष्य

इस दुनियां में किसी प्रचलित धर्ममत को मानने वाले और न मानने वाले सभी लोग इस लोक या परलोक में किसी एक या दूसरे प्रकार के सुख या आनंद प्राप्ति को ही मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं।

यह लक्ष्य नेचर के हितकर नियमों के पूर्णत: विरुद्ध है और इसी लिए किसी प्रकार से ग्रहण करने के योग्य नहीं है। जिस प्रकार शारीरिक जीवन में किसी मनुष्य का लक्ष्य स्वाद अनुराग की तृप्ति, शारीरिक और अन्य सुखों की तृप्ति नहीं हो सकता, बल्कि शारीरिक जीवन या स्वास्थ्य को स्थिर और उन्नत रखना ही हो सकता है और इस जीवन के साथ-साथ खाने-पीने आदि के जो-जो उचित सुख प्राप्त हो जाएं, वही प्राप्त करने उचित हैं और इसके जो सुख शारीरिक आयु या स्वास्थ्य को बर्बाद करने वाले हों, वह सब त्याग कर देने के योग्य हैं क्येंकि शारीरिक जीवन के विचार से अनुचित सुखों के पीछे जाने से शरीरिक आयु घट जाती है और सुखों की प्राप्ति के स्थान में कई प्रकार के अनुचित दुखों और कष्टों की प्रप्ति का क्षेत्र भी स्वभावत: अधिक हो जाता है। वह मनुष्य कैसा अभागा और मूर्ख है जो शारीरिक जीवन के विचार से केवल स्वाददार खाने-पीने कि चीजों का सुख प्राप्त करना ही अपने लिए मुख्य बात जानता हो। इसी प्रकार आत्मिक जीवन के संबंध में भी नेचर ने किसी प्रकार का सुख लाभ करना मनुष्य का मुख्य लक्ष्य नहीं रखा है, क्योंकि किसी भी आत्मिक सुख का अनुरागी बनने से या किसी सुख को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाने से मनुष्य के लिए विविध प्रकार की मिथ्या और बुराइयों का साथ देना आवश्यक हो जाता है और किसी मिथ्या या किसी बुराई के अनुरागी बनने से मनुष्य केवल यही नहीं कि अपने आत्मा की महा हानि करता है बल्कि धीरे-धीरे सुख-दुख के विचार से भी कई प्रकार के अनुचित दुखों का घर बनता चला जाता है। मानवता की वर्तमान भयानक नारकीय अवस्था इस सच्चाई का पूरा प्रमाण है। चारों और मनुष्य आपस में एक दूसरे के साथ ऐसे बुरी तरह से टकरा रहे हैं, जिस प्रकार मनुष्यों के आपसी लड़ाईयां और दंगे हो रहे हैं, जिस प्रकार दुनिया में बिना आई मौत के दृश्य दिनों-दिन बढ़ते देखे जा रहे हैं, आत्महत्या की जितनी भरमार हो रही है, पागलों

की संख्या जिस प्रकार दिनों-दिन अधिक होती जा रही है, अदालतें जिस तरह पर शिकायतों से भरी पड़ी हैं, वह किसी होश वाले मनुष्य से छुपा हुआ नहीं है। हां और तो और मनुष्य जीवन की झूठी राह पर चलने से मनुष्य शारीरिक बीमारियों का भी बुरी तरह शिकार हो रहा है और उसकी कुदरती आयु बराबर घट रही है। अब प्रश्न यह है कि यदि सुख और आनंद की प्राप्ति मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य नहीं है तो फिर उसका परम लक्ष्य और क्या है।

ठीक लक्ष्य :-

इसका उत्तर सच्चे धर्म अवतार देवआत्मा यह देते हैं- प्रत्येक अधिकारी मनुष्य के लिए अपने आत्मिक अस्तित्व के संबंध में बोधी बनना और अपने आत्मा की गठन और उसके जीवन के पतन से मोक्ष और उसमें उच्च जीवन के विकास के संबंध में सत्य ज्ञान लाभ करना और अपने आत्मिक पतन से सत्य मोक्ष पाना और अपने आत्मा में उच्च भावों की जागृति और उन्नति के द्वारा उच्च जीवन में विकसित होना उसका एक मात्र सत्य और परम लक्ष्य है।

अब नेचर में इस बात का क्या सच्चा प्रमाण है कि मनुष्य जीवन का पहली प्रकार का लक्ष्य झूठा है और दूसरी प्रकार का लक्ष्य ठीक है? इसका उत्तर यह है कि जैसे मनुष्य जगत में शारीरिक जीवन के विचार से जो लोग स्वाददार चीज़ें खाने-पीने और अन्य शारीरिक असंयम के सुखों के अनुरागी बने हुए हैं, वह स्वभावत: उन जनों की तुलना में कि जो स्वास्थ्य को मुख्य रखकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, अधिक दुखी और बीमार रहते हैं। जो लड़के किसी स्कूल कालेज में दाखिल होकर पढ़ाई को मुख्य नहीं रखते, बल्कि मौज बहार को मुख्य रखते हैं, वह स्वाभावत: अपनी पढ़ाई में बहुत घाटे में रहते हैं। वैसे ही आत्मिक जीवन के विचार से जो लोग कुछ भी आत्मिक पतन से बचे हुए हैं या कुछ भी एक या दूसरे प्रकार के उच्च भावों से विभूषित हैं, वह उन लोगों की तुलना में कि जो उन दोनों अंगों में घटिया अवस्था रखते हैं, अधिक बरकत का जीवन व्यतीत करते हुए देखे जाते हैं। जैसे एक मालिक का नौकर बेईमान, अशिष्टाचारी और निकम्मा है तो यह कौन नहीं जानता है कि ऐसे नौकर के हाथ से उसका मालिक बहुत मुसीबत में रहेगा। वह उस नौकर को अपने लिए बरकत की चीज कदापि नहीं जानेगा। इसी प्रकार किसी और मालिक का नौकर ईमानदार, परिश्रमी और शिष्टाचारी है, अब यह मालिक अपने नौकर को अपने लिए स्वभावत: बहुत बड़ी बरकत की वस्तु ख्याल करेगा। इसी तरह एक पति-पत्नी आपस में एक दूसरे के लिए उचित सम्मान का भाव रखते हैं, एक दूसरे की मेहरबानियों को सामने लाकर सच्चे कृतज्ञ प्रमाणित होते हैं, एक दूसरे के लिए गहरी हमदर्दी रखते हैं तो सोचा जा सकता है कि ऐसे पति-पत्नी का संबंध उनके लिए कैसे बरकत की चीज बन जाएगा और इसके विरुद्ध एक और पति-पत्नी आपस में एक दूसरे का अपमान करते रहते हैं, एक दूसरे के संबंध में अकृतज्ञ या कृतघ्न बने रहते हैं या एक दूसरे के संबंध में बहुत निर्दयता का व्यवहार करते हैं तो उनका परस्पर का संबंध बहुत बड़ा नारकी संबंध होगा।

देवसमाज में आए हुए सैकड़ों लोगों की निजी और पारिवारिक जीवन के ही दोनों प्रकार की अवस्थाओं के दृश्य उपरोक्त सच्चाई को बहुत अच्छी तरह प्रगट करते हैं। देवसमाज में ऐसे जन और घराने वर्तमान हैं कि जो देवसमाज में आने से पहले अपने नीच जीवन के कारण स्वयं कई प्रकार के अनुचित दुखों में मस्त रहते थे। औरों को अनुचित दुख पहुंचा रहे थे। उनका पारिवारिक जीवन बहुत कष्ट का कारण बन रहा था। अब जहां तक ऐसे लोगों ने भगवान देवआत्मा के देवप्रभावों को पाकर अपने जीवन में उच्च परिवर्तन प्राप्त किया है, वहां तक उनका निजी और पारिवारिक जीवन बहुत बड़ी बरकत की चीज बन गया है। हां कितने ही गैर देवसमाजी लोग उन्हें देख-देखकर प्रशंसा करते हैं और यह कहते हुए सुने जाते हैं कि भाई आप तो तर गए। आप तो इस दुनिया में ही सच्चे स्वर्ग में पहुंच गए है। हम लोगों के ऐसे कहां भाग्य हैं कि जो ऐसी बरकत प्राप्त कर सकें।

यह तो सच्च है कि इस दुनिया में मनुष्य जीवन का ठीक लक्ष्य दिखाने और उस पर चलने के योग्य बनाने वाला कोई आविर्भाव नहीं हुआ था, तब तक तो हम मिथ्या लक्ष्य के पीछे ही जाने और अनजानें विविध भयानक नतीजे भुगतने के लिए ही लाचार थे। इस समय जबकि जीवन का ठीक लक्ष्य दिखाने और उस पर चलने के योग्य बनाने वाले सच्चे धर्म अवतार प्रगट हो चुके हैं और वह सच्ची घटनाओं के बिना पर ठीक लक्ष्य के उच्च करिश्में दिखा रहे हैं, तब भी यदि हम लोग उनकी शरण में आकर ठीक राह पर चलने और उसकी अमूल्य बरकतें प्राप्त करने का यत्न न करें तो फिर हम से बढ़कर अभागा कौन हो सकता है? हमारी यह हार्दिक कामना है कि किसी तरह हम लोग भगवान देवआत्मा की ऐसी रौशनी को आधिक से अधिक पाएं कि जिसे पाकर हम अपने जीवन के ठीक लक्ष्य को भलीभांत देख सकें और उनका ऐसा बल लाभ कर सकें। कि जिसको पाकर हम लोग अधिक से अधिक ठीक लक्ष्य की ओर चल सकें और उसकी अमूल्य उच्च बरकतें प्राप्त करके अपने मनुष्य जन्म को सच्चे अर्थो में सफल बना सकें।

(सत्यदेव संवाद 4 जून 1940)

पू० भगवान फरमाते हैं:-

- घमंडी शख्स खुद भ्रष्ट और भ्रान्त होकर भी अपने आप को ठीक ठाक और बड़ा या बढ़िया समझता है और दूसरों को गुमराह और भ्रान्त ख़्याल करता है।
- किसी विषय में हक़ीक़त देखने से आंखें बन्द न करो, वरना तबाह और बर्बाद हो जाओगे, कि जैसे अब तक होते आए हो।
- जहां नीच घृणा मौजूद होती है, वहां न कोई कौम बन सकती है और न सोसाईटी।
- कोई धर्म समाज नहीं चल सकता, जब तक उसमें यह चीज़ न आवे कि उसको चलाने वाले अपनी ग़ल्तियों को तसलीम करें और उनको दुरूस्त करें।

कृतघ्नता कितना बड़ा पाप!

कुछ दिन हुए मैं अपनी बेटी के घर बैठी हुई थी, तभी उसके मोबाईल पर फोन आया और वह कितनी देर फोन करने वाले को तसल्ली देती रही और उसकी सहायता करने के लिए वायदा किया। फोन बन्द होने पर मैंने पूछा कि कौन इतना दुखी था? बेटी ने बताया कि फलां फलां लड़की की सास थी। उस परिवार को मैं भी अच्छी तरह जानती थी। वह औरत एक सीनियर डाक्टर की पत्नी थी। उसके दो बेटे थे। एक बेटा और बहू भी डाक्टर थे, लाखों की महीने की कमाई थी। दूसरा बेटा भी बहुत सीनियर पोस्ट पर था और उसका विदेश जाने का प्रोग्राम बन गया था। रिटायरमैन्ट के बाद जल्दी ही पति का स्वर्गवास हो गया। और मां डाक्टर लड़के के घर आ गई। तब दोनों बेटे और बहुऐं उसके साथ ठीक व्यवहार करते रहे और जल्दी ही पिता का रिटायरमैन्ट का पैसा उससे हथिया लिया जो 8-10 लाख रु0 था। वह यू.पी. में रही थी, वहां अपना घर था। उसका सारा समान अपने अपने घरों में ले गए। कई सालों से घर वीरान पड़ा है। इस सबके बाद मां की दुर्दशा शुरु हुई। उसको ताड़ना-झाड़ना, दुरव्यवहार करना और जहां तक डाक्टर दम्पति ने उसे घर से बाहर फैंक दिया। बेचारी ने पति की पैन्शन से एक कमरा एक घर की दूसरी मंजिल पर किराए पर ले लिया। वहां कोई सुख सुविधा नहीं। अकेलापन उससे सहा नहीं जाता। फिर भी बहु बेटा अपने काम के समय अपनी बेटी उसके पास छोड़ जाते हैं। उस दिन फिर दुर्घटना घटी। पति की बरसी थी। दया करके पुत्र ने कहा कि आप हमारे घर आ जाओ और लंच यहीं कर लेना। मां का दिल था, फिर चली गई। अभी लंच भी नहीं हुआ था कि उसकी पोती जो 8-10 वर्ष की है, ने उसको बहुत अपमानित किया। जब उसने उसे रोका तो बहु ने सास को धक्के मारकर घर से बाहर निकाल दिया और किवाड़ बन्द कर दिया। वहां से अपमानित होकर घर आकर उसने फोन पर रो रो कर अपना दुखड़ा सुनाया। बच्चों की कृतघ्नता की भी इन्तहा देखने को मिली। 2 बेटों के होते हुए वह चाहती है कि उसे कोई अच्छा ओल्ड होम मिल जाए ताकि वह अपनी बाकी की ज़िन्दगी वहां गुज़ार सके।

इस घटना ने हम सबका दिल दहला दिया, कृतघ्नता ऐसा डंक है, जिसका ज़हर मनुष्य को न मरने देता है और न जीने देता है। उन बेटों के जन्म पर कितनी बधाईयां मिली होंगी, कितनी मिठाईयां बंटी होंगी, मां बाप ने कितने दुलार से पाला, पढ़ाया और लाखों कमाने के योग्य बनाया, परन्तु एक सीनियर सरकारी डाक्टर की पत्नी दो बेटों के होते कितनी असहाय है उसका अनुमान लगाना कठिन है।

एक और बाप जिसकी एक बेटी और दो बेटे हैं। वह अपने बच्चों के प्रैशर से अपनी यादाश्त खो बैठा है, यह कहता रहता है कि मैं अभी साईन कर दूंगा। यही दिमाग़ में समा गया है कि यह मेरे जायदाद पर दस्तखत चाहते हैं। ऐसी आवस्था में भी एक बेटा तो फिर भी उनकी कुछ देख भाल कर रहा है, दूसरा इंजनियर है, पत्नी बहुत बड़ी अफसर

है, परन्तु कृतज्ञता से वहीन हृदय शूल ही चुभो सकते हैं। वह आता है और अपने बड़े भाई को कहता है कि बाज़ार में ऐसा इन्जैक्शन मिलता है, जो मनुष्य को वैजीटेबल बना देता है, यानि वह केवल जीता है और कुछ नहीं कर सकता, वह इन्जैक्शन हम डैडी को लगवा दें और जो कुछ उनके पास है, उस पर साईन करवा लें। बड़े भाई में अभी कुछ अंश इन्सानियत बाकी थी, उसने उसे डांट दिया और ऐसा करने के लिए नहीं माना, परन्तु एक बेटे के लिए यह सोचना भी कितना शर्मनाक है!

मनुष्य प्रकृति किस कदर नीच हो सकती है, यह दो घटनाएं ज़ाहिर करती हैं, जो हमारे जानकारों में घटी हैं। परन्तु यह घर घर की कहानी है। लालच, स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता मनुष्य को अन्धा और पागल बना देते हैं।

एक ओल्ड ऐज होम मे रह रहे रिटायरड जज ने अपनी कहानी बताई, उसका बेटा भी डाक्टर था, उसने बेटा और बेटी को यह कहते हुए सुना कि 6-6 महिने हम डैडी को रखें, दामाद यह ज़िम्मेवारी लेने से हिचकिचा रहा था, यह सुनकर उसका कलेजा फट गया कि जिन बच्चों को कष्टों और दुखों में से गुज़रकर पाला, वह अब उसे बोझ समझ रहे हैं जबकि वह परिवार में दख़ल अन्दाज़ी न करने वाले स्वभाव का व्यक्ति था। बेटी को क्या कहता जब बेटा ही उसे बोझ समझने लगा, उस जज ने कहा कि जज होने की हैसीयत से वह बच्चों को जज करने में बुरी तरह फेल हो गया। मैं कितना मूर्ख बना रहा।

शैक्सीपीयर के नावल में किंगलियर का ज़िकर आता है। उसकी तीन बेटियां थी, उसने अपनी बड़ी दोनों बेटियों में अपना राज पाठ बांट दिया, सब कुछ लेकर बेटियों को बाप के सेवादारों का बोझ कठिन लगने लगा और पिता के साथ इस प्रकार का आमानवीय व्यवहार किया कि वह पागल हो गए। वह यह पुकारते थे:-

ऐ बर्फीली हवाओं, ज़ोर से चलो, ऐ जहरीले नागो तुम मुझे डसो, बर्फीली हवाओं की काट और सांपों के डंक उतना दुख नहीं पंहुचा सकते, जितने कृतघ्न सन्तान के अपव्यवहार वा कृतघ्नता के व्यवहार डंक मारते हैं।

कृतघ्नता के इन प्रहारों से बचने का एक ही मार्ग है कि जब दूसरों के लिए कुछ करो तो उनसे अच्छे व्यवहारों की आशा न रखो। ईश्वर प्रसाद विद्या सागर को किसी ने बताया था कि फलां आदमी तुम्हें गालियां निकाल रहा है तो उन्होंने सोचकर बताया कि "मैंने तो उसका कोई भला नहीं किया" उनके कहने का अर्थ है कि मनुष्य प्रकति ही ऐसी है कि जिसके लिए तुम कुछ भला करोगे, वही तुम्हें दुख पहुंचाएगा।

कहा जाता है कि ईसा मसीह ने 10 कोढ़ियों को ठीक किया, केवल एक उनमें से उन्हें धन्यवाद देने के लिए खड़ा था, तो उन्होंने पूछा कि बाकी के 9 कहां गए? तब बताया गया कि उनकी टांगे ठीक हो गई और वह भागने के योग्य हो गए और भाग गए।

सेवा पाकर भूल जाना, बहुत साधारण बात है, परन्तु मनुष्य इतना पागल और अन्धा हो जाता है कि सेवा करने वाले को सताने, तड़पाने के लिए

भी नहीं हिचकिचाता।

उपकारियों के दिलों पर कृतघ्नता के तीर लगाने वाले, विशेष रूप से बच्चे यह भूल जाते हैं कि उन्हें भी अपने बच्चों के हाथों ऐसा ही व्यवहार मिलने वाला है, आक का पौधा बीजकर आम की आशा नहीं कर सकते। कृतज्ञता वा उपकारियों के उपकारों को देखना ऐसे ही है जैसे गुलाब के फूल की सुगन्ध और कृतघ्नता गुलाब में लगे शूल हैं, जो जिसको चुभते हैं, लहुलुहान कर देते हैं।

काश! मानवता इस सत्य को समझ सके। देव धर्म के संस्थापक ने हमें ऐसा वातावरण प्रदान किया है, जिसमें कृतघ्न इन्सान अपना वास्तविक रूप देखने के योग्य हुए हैं और कृतज्ञता पैदा करने के संग्राम में लगे हैं। सताने, तड़पाने वाले बच्चे सचमुच श्रवण कुमार बने हैं। अपनी पत्नियों पर जुल्म ढाने वाले सच्चे पतिव्रता वा सेवाकारी पति बने हैं। एक एक उच्च पद धारी अपने नौकरों के उपकारों को अनुभव करने वाला बना है। सत्गुरू ने उपकारियों की नई दुनियां खोल दी है। इससे नारकीय परिवार स्वर्गीय परिवार बन गए। एक एक जन पुकार उठा है कि अगर स्वर्ग देखना है तो मेरे घर में देखो, कि मेरे बच्चे हमारी कितनी सेवा करते हैं।

परन्तु यह परिवर्तन अधिकारी आत्माओं में ही सम्भव हैं। नहीं तो बड़े बड़े उच्च पदधारी भी इससे खाली हैं। दूसरों से सेवा पाकर, सुरक्षा पाकर, आर्थिक सहायता पाकर तोताचश्म हो जाते हैं और उनके दुख दर्द से भी बेख़बर रहते हैं। किसी ने सच्च कहा है, "मतलब निकल गया तो पहचानते नहीं"

काश! हम ऐसे हिंसक न बनें।

सुरजीत बराड़

कालिज़ में माता पिता की सभा

प्रिंसीपल अरुण कुमार जी कांसल के अनुरोध पर श्रीमान बलबहादर सिंह जी ने गुरू गोबिन्द सिंह कालिज़ आफ ऐजूकेशन तलवंड़ी साबो 19 मार्च 2010 को माता पिता के सम्बन्ध में एक लैक्चर दिया। वक्ता ने माता पिता और सन्तान के पवित्र सम्बन्ध के विषय में वर्णन किया। माता पिता की जान की बाजी लगाने वाले उदाहरण प्रस्तुत किए। कालिज के प्रिंसीपल, मैनेजमैंट के मैंबर आदि हाजिर थे। विद्यार्थियों ने भी अपने माता पिता के सम्बन्ध में अपने सुन्दर भावों का प्रकाश किया, फूलों के हारों के द्वारा विद्यार्थियों ने अपने माता पिता का सन्मान किया। कालिज की ओर से एक सम्मान चिन्ह देकर वक्ता का सम्मान किया। प्रिंसीपल साहिब वा अन्य माननिय जनों ने ऐसे लैक्चर और रखने का आग्रह किया।

इतिहास का महत्व

इतिहास को पढ़ना और परीक्षा के लिए पढ़ना साधारण: बच्चों को रुचिकर नहीं लगता इसी कारण इतिहास के अध्यापक परेशान रहते हैं। परन्तु यदि हम गहराई में जाएं तो इतिहास का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इतिहास से ही हमें प्राचीन काल की गौरव-मय घटनाओं का ज्ञान होता है। फाह्यान सबसे पहला चीनी यात्री था जो अपने पांच साथियों समेत सम्राट विक्रमादित्य के समय में भारत आया था। वह कई वर्ष यहां रहा और भारत में रहते उसने अनेक स्थानों की यात्रा की, तब उसने लिखा था कि समृद्धि की दृष्टि से भारत सोने की चिड़िया था। उस समय के लोग अहिंसा के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे, पूर्णत: ईमानदार थे, घरों में ताले नहीं लगाए जाते थे। स्त्रियां पुरुष दोनों शिक्षित होते थे। इसी प्रकार सन् 1630 में ह्यूनसांग ने भी भारत का गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया था।

इतिहास के अध्ययन से ही हमें पता चलता है कि धीरे धीरे हमारे देश में किस प्रकार धार्मिक पाखण्ड बढ़ते गए। पुरोहितों, पुजारियों ने भोली भाली जनता को धर्म के नाम पर लूटना आरम्भ किया, सती प्रथा, छूतछात, विधवा विवाह निषेध, बाल विवाह आदि कुरीतियों ने हमारी समाज़ को जकड़ लिया। धर्म के नाम पर खून की नदियां बह गई। इतिहास से जहां हमें अपने देश के गौरव और गौरव बढ़ाने वालों का ज्ञान होता है, वहां देश को पतित करने वालों का भी ज्ञान होता है। किस किस शासक की कौन कौन सी नीतियां लाभप्रद थी और किन किन नीतियों और कमज़ोरियों ने हमारे देश को पतन के गढे में गिरा दिया? कैसे स्वार्थ, धन लोलुपता ने देश द्रोही पैदा किए, जिनके काले कारनामों से देश की महा हानि तो हुई, वह स्वयं भी नष्ट हो गए, उनकी नसलें ख़त्म हो गई। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि इतिहास में भूतकाल में घटित घटनाक्रमों, विश्व विजय की महत्वाकांक्षा रखने वाले सम्राटों और उनके द्वारा मानवता की भलाई और मानव जाति को प्रभावित करने वाले युद्धों, नई नई खोजों और इसके भिन्न मानवता की तबाही की घटनाओं का समावेश होता है। इसलिए इतिहास का अध्ययन कभी मन को प्रफुल्लित करता है और कभी पीड़ा देने वाला भी होता है। इसलिए इतिहास के अध्ययन का महत्व है।

इतिहास से ही एक एक योग्य शासक, प्रबन्धक या समाज सुधारक के जीवन के तुलनात्मक अध्ययन से जहां हम अपना सही मूल्यांकन कर सकते हैं, वहां इतिहास से अमूल्य प्रेरणा, शिक्षा, रोशनी और साहस प्राप्त कर सकते हैं और उससे अपने देश, समाज का और स्वयं अपना उत्थान कर सकते हैं।

जब हम गौरवशाली घटनाएं पढ़ते हैं तो वह हमारे लिए अनुकरणीय, उत्साहप्रद, पथ-प्रदर्शक और जीवन को नया मोड़ देने वाली होती हैं। जब हम उन घटनाओं को पढ़ते हैं, जिनसे समाज और देश को हानि पहुंची है, तो वह हमारे लिए विचारणीय, शिक्षाप्रद, आखें खोलने वाली और चौकन्ना करने वाली होती हैं। इतिहास का अध्ययन ही हमें भूतकाल की गल्तियों को न दोहराने का सबक देता है। केवल पुराने गौरवमय इतिहास को पढ़कर या बताकर हम आगे नहीं बढ़ सकते, हमारी उन्नति का एक ही मार्ग है कि पुराने गौरव को कायम रखें और उस समय जो गल्तियां हुई हैं, उनको न दोहराएं और उन्हें ठीक करने का प्रयत्न करें। जो अच्छी रिवायतें रहीं हैं उनको कायम रखें और जो हानिकारक प्रथाएं

धीरे धीरे हर समाज और देश में जन्म लेती हैं, उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें।

विश्व तो असीम है, देश भी बहुत बड़ा है, पर हमारी समाज जो छोटी सी ईकाई है, उसका भी गौरव - मय और सुनहरा इतिहास है। सर्वप्रथम उसका गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमारी बहुत ऊंची रिवायतें रही हैं, पूजनीय भगवान देवात्मा ने बहुत ऊंचे लक्ष्य को लेकर देव समाज की स्थापना की है, यदि हम अपने उस सुनहरी इतिहास और रिवायतों को याद रखें, तो हम समाज का लाभकारी अंग बन सकते हैं।

हमें श्रद्धेया जी, श्रद्धेय पंडित परमेश्वर दत्त जी, श्रद्धेय देवत्व सिंह जी, भाई मोहन देव जी, श्री धर्मबल जी, भाई अमर सिंह जी श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्री पी. वी कनल जी, सरदार जमीयत सिंह जी, स्वामी गोबिन्द राम जी और ऐसे अन्य आत्मा मिले, जिन्होंने असहनीय आर्थिक संकटों के बावजूद अपने त्याग, साधना और निज की उपलब्धियों से देव समाज के इतिहास को चार चाँद लगा दिए। उनके उच्च जीवन हमारे लिए सदा सदा प्रेरणा के स्त्रोत बन सकते है, परन्तु यदि आर्थिक खुशहाली में भी हम समाज के काम को बढ़ाने में अधिक सफल नहीं होते, T.V. वा Internet के जमाने में भी हम पीछे रह जाएगें, तो हमारा योगदान समाज के इतिहास में उतना सराहनरीय नहीं रह सकता। समाज के इतिहास में सुख आरामों के समानों को तो हम यह कहकर न्यायोचित बताते हैं कि पूजनीय भगवान ने अच्छे से अच्छे पदार्थो को त्यागने की शिक्षा नहीं दी, इसलिए समाज के कार्यकर्ता इन सामानों के अधिक अधिकारी हैं, परन्तु वह अधिकार पाकर हम उच्च परिणाम पैदा करने में कहां तक हेतू होते हैं? जो त्याग करके श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने 20 से भी अधिक कर्मचारी पैदा कर दिए, उनके संग्राम के अनुकरण करने में कितनी सफलता प्राप्त करते हैं?

हमारी समाज का इतिहास ईमानदारी के सुन्दर उदाहरणों से भरा पड़ा हैं समाजिक जनों की ईमानदारी की कसमें खाई जाती थीं। हमारे सामने श्रीमान मनोहर लाल जी रसोई की आग पर अपनी शेव के लिए कटोरी में जो पानी गर्म करते थे, उसके पैसे देते थे, ऐसी धटनाएं अधिक से अधिक और निरंतर पैदा हौती रहें तो ही इतिहास रच सकते हैं।

समाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए, समाज की आर्थिक, साहित्यक उत्रति के लिए आत्माओं में उच्च परिवर्तन पैदा करने के लिए, समाज के लिए भवन निर्माण करने के लिए समाजिक संस्थाओं को बनाने और उन्नत करने के लिए जिनकी जितनी उपलब्धियां और त्याग हों यदि उसके अनुसार उन्नति हो तो समाज के कार्यकर्ता अधिक लाभ प्रद हो सकते हैं।

समाज में परिशोध के अद्भुत नज़ारे पैदा होते थे। विचारों के मतभेद रह सकते हैं और किसी संस्था की उन्नति के लिए यह आवश्यक भी हैं, परन्तु जब भी देव प्रभावदायक मण्डल में आत्मा बैठते थे तो अपनी ग़ल्ती मानने में उन्हें कभी झिझक नहीं होती थी, अब भी अगर परिशोध के वैसे नज़ारे पैदा हों तो हम अपने सुनहरी इतिहास की गरिमा को बनाए रखने में सहायक होंगे।

हम सब सोचें कि हमारी कोई क्रिया इस इतिहास को दूषित न कर दे। पूजनीय भगवान की रोशनी में अपने जीवनों का टटोलें और जहां जहां सुधार करके हम इस इतिहास को सुनहरा बना सकते हैं, उसकी ओर कदम बढ़ाएं।

सुरजीत बराड़

एक रुपये का महत्व

एक रुपए की छोटी सी रकम भी किसी की ज़िंदगी को बचाने में मददगार साबित हो सकती है, यह सुनने में असंभव भले ही लगे, लेकिन मॉ-लय वेलफेयर सोसायटी की सचिव सपना अग्रवाल ने इस काम को संभव कर दिखाया है।

एक कहावत है- 'बूंद-बूंद से घड़ा भरता है' और इसे पूरी तरह चरितार्थ किया है मॉ-लय वेलफेयर सोसायटी ने। इस सोसायटी ने अपनी सूझ-बूझ और अथक परिश्रम से यह साबित कर दिया है कि एक रुपए की छोटी सी राशि भी किसी की ज़िंदगी को बचाने में मददगार साबित हो सकती है। सोसायटी की सचिव सपना अग्रवाल कहती हैं, मैं कोई समाज सुधारक नहीं हूं। बस, अभी साल भर पहले ही माता-पिता की तबीयत काफी खराब हुई तो आगरा के कुछ बेहतरीन अस्पतालों के चक्कर लगाने के बाद हम दिल्ली के अपोलो अस्पताल तक गए। थोड़े बहुत समर्थ्य होने के कारण किसी प्रकार मैंने तो अपने माता-पिता का इलाज करवा लिया, लेकिन साथ ही यह भी महसूस किया कि हर व्यक्ति इतना सक्षम नहीं होता कि अपना इलाज इन मंहगे अस्पतालों में करवा सके। इलाज करवाना तो दूर की बात है इन महंगे अस्पतालों में प्रवेश करना ही हर एक के बस के बात नहीं होती है। ऐसे में बीमार के परिजनों के सामने यह संकट होता है कि वह उसका इतना महंगा इलाज कैसे करवाएं और यही वजह मरीज की मौत का कारण भी बन जाती है। सपना कहती हैं, जब मुझे इस कड़वी सच्चाई का एहसास हुआ तो मैंने इस बारे में बहुत सोचा। तभी मुझे विचार आया कि शहर में एक ऐसे अस्पताल की सख्त आवश्यकता है जिसकी गुणवत्ता विश्वस्तरीय हो पर कीमत सरकारी अस्पताल जितनी। जब मन में विचार आया तो उसे पूरा करने के लिए रास्ता भी दिखाई दिया, लेकिन उसके लिए मुझे बहुत से लोगों के सहयोग की जरूरत थी। यह काम मैं अकेले नहीं कर सकती थी, लेकिन लाखों लोगों के साथ मिलकर जरूर कर सकती थी। इसी सोच के साथ मैंने एक बॉक्स बनाया और लोगों से अपील की वे रुपया रोज बचाकर उस पेटी में डालें। मैंने यह महसूस किया कि यदि हम सब 1 रूपया रोज बचाएं तो पता नहीं कितनी ही ज़िंदगियों को बचाया जा सकता है और ऐसे विश्वस्तरीय हॉस्पिटल का निर्माण किया जा सकता है जहां कोई भी ज़िंदगी इलाज के अभाव और पैसे की कमी के कारण नहीं हारेगी। इस तरह हमने अपने सफर की शुरूआत की। 'धन्यवाद का एक कदम मॉ-लय वेलफेयर सोसायटी' के द्वारा चलाया गया यह अभियान यह संदेश देता है कि चाहे सहयोग की राशि भले ही छोटी है, लेकिन इस काम को करने के लिए हमारा और आपका जज़्बा बहुत बड़ा है। 'कम से कम अपना 1 रुपया इस अभियान के लिए उस बॉक्स में जरूर डालें। इस संदेश के साथ बनाया गया पहला बॉक्स 17 जनवरी, 2009 को लगाया गया और रोज अपना ऑफिस का काम खत्म करने के बाद हमने नियम से एक और दो बॉक्स प्रतिदिन किसी व्यवसाय या प्रतिष्ठान पर लगाए। एक दिन भले ही हम अकेले ही चले थे पर आज तकरीबन 1600 लोगों का काफिला हमारे साथ है। हम जानते हैं कि यदि अभी तक इस बॉक्स में मात्र 2 लाख 70 हजार रूपए ही आए हैं और इन रुपयों से अस्पताल कभी नहीं बनेगा पर 2 लाख 70 हजार लोगों से जुड़ने पर जरूर

बनेगा। हर एक रुपया जो हमें बॉक्स मे मिलता है उसे डालने वालों ने दिल की गहराइयों से हमारी आवाज सुनी।

हमने अब तक डेढ़ हजार से भी अधिक लोगों का इलाज़ इन रुपयों की मदद से कराया है और इसके लिए शहर के प्रमुख समाजसेवी भी आगे आए हैं और उनके इस अभियान से जुड़ने पर हमें काफी ताकत मिली है। सपना कहती हैं, यदि हम सब इस एक रुपए की ताकत को समझें और दिन के एक महीने की 30 और साल के 365 रुपए जोड़कर इस अभियान को समर्पित करें तो एक विश्वस्तरीय आधुनिक अस्पताल का निर्माण नि:सन्देह किया जा सकता है। यह पहला अस्पताल भले ही आगरा शहर में बनेगा, परंतु यह विश्वास है कि इस सफलता के बाद हर शहर के लोग इस जरूरत को समझेंगे और छोटी-मोटी राशि को जोड़कर स्वयं ही अपने-अपने शहर में मानवता की यह मिसाल खड़ी करेंगे। एक रुपए और इन्सान में बहुत ताकत होती है।

श्राद्ध की सभा

20 मार्च 2010 को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी शाम 4 बजे के लगभग मल्लेका जिला सिरसा में पहुंचे। शाम 8 बजे श्रीमान जीत सिंह जी के घर उनके माता के सम्बन्ध शुभ कामना का साधन किया गया। 40-50 जन इसमें शामिल थे। श्रीमान गुरूदेव राज जी ने माता जी के सेवाकारी रूप वा और गुणों का पहले बहुत सुन्दर भावों से वर्णन किया। शुभ कामना सम्बन्धी गीत गाने के बाद माता जी वा उनके परिवारिक जनों को धैर्य प्राप्त हो ऐसी शुभ कामना की गई।

21 मार्च 2010 को 11 बजे माता जी के सम्बन्ध मे श्राद्ध का साधन किया गया। इसमें बहुत बड़ा शामियाना लगाकर सुन्दर स्टेज सजाई गई। सुन्दर सफेद चादरों से बिछाई की गई। सबसे ऊपर परम पू० भगवान देवात्मा की छवि रखी गई। फूलों की टोकरी रखी गई। पहले गुरूदेव राज जी और अन्य साथियों ने वैराग्य विषयक भजन का गान किया। सैंकडों स्त्री पुरुष माता जी को श्रद्धांजली देने के लिए पहुंचे। फिर सभापति जी ने श्रद्धांजली सभा के विषय में बताया कि थोड़े आदमी ऐसी श्रद्धांजली के अधिकारी होते हैं, फिर माता जी के सुन्दर गुणों का वर्णन किया गया कि परलोक वासी सम्बन्धी के शुभ गुण परिवार में पैदा होने ज़रूरी हैं। उनके उपकारों को शुक्रगुज़ारी के भावों से याद करके और उनके प्रति की गई गल्तियों का सच्चे दिल से परिशोध करके ही इस साधन की सार्थकता है। सभापति जी के ब्यान के बाद कुछ और ब्यान हुए:-

(1) सुखदेव सिंह जी (सपुत्र) ने अपने माता जी के विशेष गुण को महसूस करके श्रद्धांजली अर्पण की।
(2) श्रीमान गुरूदेव राज जी ने भी माता जी के विशेष गुणों का वर्णन किया।
(3) एक और माननिय जन ने माता जी के सपुत्रों के उपकारों का वर्णन किया और श्रद्धांजली भेंट की।

अन्त में श्रीमान सभपति जी ने बताया किया कि माता जी इसलिए भी श्रद्धांजली की हकदार हैं, क्योंकि उन्होंने विशेष गुणधारी और परोपकारी बेटों को जन्म दिया है:-

"जननी जनें तो भक्त जन, जां दाता जां सूर,
नहीं तो जननी बांझ रहे, काहे गंवाए नूर"

शुभ कामना सम्बन्धी गीत के बाद शुभ कामना की गई, परिवार की तरफ से 5000 रु० दान माता जी के भले के लिए दिया गया।

ऐसे भी हैं इन्सान!

मुश्किल यह है कि हम नहीं जानते हैं कि हम कर क्या रहें है। कहां जा रहे हैं? कहां खड़े हैं। हमारा दाखिल-खारिज क्या है? यदि हम अपने को ठीक से जान लें पूरी ईमानदारी से, तो राह आसान हो सकती है, लेकिन आंख की बदकिस्मती कि वह खुद को नहीं देख पाती। इसके लिए दर्पण की आवश्यकता होती है। स्वयं को जानने के लिए आपके पास आत्मा-समीक्षा रूपी दर्पण है। अपने अंदर झांकेंगे तो आपको अपनी तस्वीर नज़र आएगी- 'दिल के आईने में हैं तस्वीर यार। जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।' लेकिन जिसकी आंखों पर अंह, पक्षपात, लोभ और स्वार्थ का चश्मा चढ़ा हो, वह सत्य को नहीं देख सकता। दरअसल, भौतिकवाद के विनाशकारी परिणामों ने हमें बुरी तरह जकड़ लिया है। इसीलिए हम भ्रम में जी रहे हैं। पैरों के नीचे जमीन नहीं होती और आसमान छूने की तमन्ना रखते हैं। जीवन में असंतुलन बढ़ रहा है। हम आत्म-केन्द्रित और संवेदनशून्य होते जा रहे हैं। मूल्य-बोध नहीं रह गया है। अन्याय, अत्याचार और समस्याओं से आहत होने वाले जन कम हैं और उनसे जूझने वाले और भी कम। भूल चुके हैं कि चरित्र से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई शक्ति। मैं दूसरों से अधिक बुद्धिमान एवं गुणवान हूं यह भाव आते ही मनुष्य अंहकारी हो जाता है। अहं की भूख जीवन की राह की बड़ी बाधा हैं अत: दर्पण का विखंडन जरूरी है। आत्म-सुख का अनुभव करना हो और बेहतर समाज की रचना करनी हो तो हमें अपनी सोच को सकारात्मक और परहितकारी बनाना होगा। उस तरह का जीवन का अपना एक अलग ही सुख और आनंद है। संवेदनों के विस्तार से हम स्वंय और दूसरों को खुशी से मालामाल कर सकते हैं। प्रसाद ने 'कामयानी' में कहा भी है- 'औरों को हंसते देखो/हंसों और सुख पाओ। अपने सुख को हंसते देखो/हंसो और सुख पाओ। अपने सुख को विस्तृत कर लो/सबको सुखी बनाओ।' इसके समर्थन में जो कह रहा हूं वह सुनी-सुनाई या लिखी -लिखाई बात नहीं है, आंखों देखी है। केरल के छप्पन वर्षीय प्रौढ़ घूम-घूमकर लोगों से शिकायती अर्जियां एकत्र कर शासन के पास भेजते हैं। उनका स्मरण भी करते हैं और यथासंभव समस्याओं को हल करवाने का प्रयास करते हैं। वर्षो से वे यह श्रम-साध्य कार्य कर रहे हैं, पर न तो वे थकते हैं न उन्हें अपने इस काम से ऊब होती है। नैतिक मूल्यों के पक्षधर ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ग्लैड़ स्टोन साईकिल पर दफ्तर जाते थे। आज के हमारे राजनेताओं की भांति नहीं की दो-चार रोज गए, अखबारों में तस्वीरें छपवा ली और फिर भूल गए। ग्लैड स्टोन एक बार रेल में द्वितीय श्रेणी में यात्रा कर रहे थे। वहां मौजूद एक पत्रकार ने उनसे कहा- 'आप दूसरी श्रेणी में यात्रा कर रहे हैं, लेकिन आपका पुत्र इसी ट्रेन में प्रथम श्रेणी में 'सफर कर रहा है!' ग्लैड स्टोन ने बड़ी सहजता से कहा-'मैं तो किसान पुत्र हूं पर मेरा बेटा तो प्रधानमंत्री का पुत्र है, वह इतना तो कर ही सकता है।'

क्रिश्चियन कॉलेज, इंदौर के प्रोफेसर जयदेव प्रसाद दुबे ने इंदौर के बजाय उज्जैन में विश्वविद्यालय स्थापित करने के निर्णय से असंतुष्ट और अप्रसन्न होकर स्थानीय समाचार-पत्र में एक लेख लिखा था। इस आलोचना से नराज हो शासन ने कॉलेज के

प्रचार्य डॉ. स्कॉट को लिखा कि संबंधित प्रोफेसर के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाए और दोषी पाए जाने पर निष्कासित कर दिया जाए, अन्यथा कॉलेज को मिलने वाला शासकीय अनुदान बंद कर दिया जाएगा। प्राचार्य ने लेख का हिन्दी अनुवाद कर उसे ध्यान से पढ़ा और पाया कि उसमें आपत्तिजनक कुछ भी नहीं है। उन्होंने शासन को तदनुसार जवाब दे दिया। उन्होंने अभिव्यक्ति की आज़ादी का हवाला भी दिया। मामला ठंडे बस्ते में चला गया। यदि आज किसी अधिकारी या प्रिंसीपल को अपने किसी अधीननस्थ के विरुद्ध कार्यवाही करने के शासकीय निर्देश प्राप्त हों, वह भी आर्थिक सहायता रोकने की धौंस के साथ तब तो वह अधिकारी आंख मूंदकर अधीनस्थ कर्मचारी के खिलाफ तत्काल एक्शन ले लेगा, यह जानते हुए भी कि अधीनस्थ पूर्णतया और अकेला दोषी नहीं है। अधिकारी अपने को जिम्मेदारी से बचाने के लिए सारा दोष अधीनस्थ के माथे मढ़ देगा और अपनी चमड़ी बचा लेगा। ऐसे में डॉ. स्कॉट का आचरण हमें दूर और देर तक सोचने पर विवश करता है।

स्वार्थ के आगे सच का साथ देने का नैतिक साहस कम ही लोगों में होता है। स्कॉट में था। मोपेड पर सवार एक युवा मित्र घर जा रहा था। रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त हो, सड़क पर अचेत पड़ा रहा। कई लोग और वाहन गुजरे, पर कोई नहीं रुका। ऐसे में सड़क किनारे के गांव के कुछ लोगों ने उसे संभाला और एक बस को जबरन रोककर उसे घर ले जाकर हॉस्पिटल में भर्ती कराया। उसकी जेब से मिले कार्ड से परिजनों को खबर की और बताया कि युवक खतरे से बाहर है। एक सुबह युवक का वृद्ध पिता इंदौर से रवाना हुआ पर वह सीधे घर नहीं गया। बीच में उस गांव में रुका जहां के लोगों ने उसके बेटे की प्राण रक्षा की थी। वहां उसने उन लोगों के प्रति कृतज्ञता प्रगट की और धन्यवाद दिया। इसके बाद वह घर बेटे के पास पहुंचा। उसे पहले उन संवेदनशील लोगों के प्रति आभार व्यक्त करना जरूरी लगा। अन्यथा लोग उस बैसाखी को ही भूल जाते हैं, जिसने कष्ट के दिनों में उनका साथ दिया था। संवेदना का इससे बेहतर उदाहरण और क्या हो सकता है।

संवेदना का पाठ पढ़ाने वाले कुछ 'महान' साहित्यकारों के सामाजिक जीवन और साहित्यिक जीवन में बड़ा फर्क होता है। मायाराम सुतजन इसके अपवाद थे। उनके-से सज्जन व्यक्ति की प्रजाति अब लुप्त होती जा रही है। ग्वालियर में म. प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित वृहद कथा-गोष्ठी का आरंभ होने से पूर्व मायाराम जी व कुछ अन्य साहित्यकार उस हाल में अनौपचारिक चर्चा कर रहे थे, जहां अधिकांश साहित्यकारों को ठहराया गया था। मैं वहां बड़ी बेचैनी से अपने नोट्स का पुरजा ढूंढ़ रहा था। पर वह नहीं मिला। निराश हो मैं कुछ दूरी पर स्थित गोष्ठी-कक्ष में चर्चा हेतु पहुंच गया। भय था कि नोट्स के अभाव में कुछ मुद्दे छूट न जाएं बाद में मायाराम जी आए और पुरजा मेरे हाथ में थमाते हुए कहा-'शायद तुम वहां इसी को तलाश रहे थे। वहीं बिस्तर के पास पड़ा था।' मैं अभिभूत था। सुरजनजी की सहजता और अंहशून्य व्यवहार के समक्ष नत-मस्तक। उनके सद्व्यवहार के भार तले दबा हुआ। उस दिन उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया था।

सहित्यकार की सज्जनता का एक और उदाहरण। सागर के एक साहित्यिक समारोह में डॉ. कांतिकुमार जैन ने शरद पगारे के कथा-संग्रह का उल्लेख करते हुए उसका नाम 'उजाले की ओर' बताया था। समारोह की समाप्ति के पश्चात अनौपचारिक

चर्चा में मैंने बताया कि पगारे के संग्रह का नाम 'उजाले की ओर' न होकर 'उजाले की तलाश' है। कांतिकुमारजी असमंजस में पड़ गए, पर कहा कुछ नहीं। बात बिल्कुल सहज ढंग ये हुई थी। अगले दिन मैं इंदौर लौट आया था। पांच-छह दिन बाद मुझे कांतिकुमारजी का पोस्टकार्ड मिला, लिखा था- उस दिन मुझसे चूक हो गई। श्री शरद पगारे की कृति का नाम 'उजाले की तलाश' ही है, 'उजाले की ओर' नहीं, जैसा मैं कह रहा था। आपका कथन सही था।' क्या यह मामूली बात है? आज जब अनेक वरिष्ठ साहित्यकार पाठकों के पात्रों के उत्तर तक नहीं देते, सीधे मुंह बात नहीं करते, तब अपनी भूल स्वीकार करते हुए स्वप्रेरणा से सच को स्वीकार करना कांतिकुमार जी की कितनी बडी सहृदयता एवं संवेदनशीलता।! शिवपूजन जी की पत्नी की मृत्यु कुछ समय पूर्व ही हुई थी। वे लोगों को सूचित करने और बचे-खुचे सीमित धन से अंतिम संस्कार की योजना बना ही रहे थे कि उग्रजी ने दरवाजे पर दस्तक दी और दुखद खबर से बेखबर उन्होंने दरवाजे पर ही अपनी अत्यंत विषम और दुखद स्थिति का उल्लेख करते हुए कुछ धन की मांग की। शिवपूजन जी कुछ क्षण असमंजस में रहे, फिर सोचा, 'जीवित की जरूरत मृत की जरूरत से पहले पूरी की जानी चाहिए' और उन्होंने राशि जो उनके पास थी, उग्रजी को दे दी।

अध्यापक उपाध्यायजी सात वर्षो से निगम साहब के किरायेदार थे। दोनों भले आदमी थे, परस्पर व्यवहार घरेलू और सौहार्द्रपूर्ण। खुद उपाध्यायजी द्वारा किराया बढ़ाने के लिए कभी तैयार नहीं हुए। उनका कहना था कि पैसा ही सब कुछ नहीं है। पदोन्नत होने पर उपाध्यायजी का स्थानांतरण अन्यत्र हो गया। सुनकर निगम साहब उदास हो गए। दुखी मन से उन्होंने उपाध्यायजी को विदा किया। मकान रिक्त होने के बाद भी निगम साहब ने उसे किराए पर नहीं उठाया, जबकि लोग अधिक भाड़ा देने के लिए तैयार थे। इस पागलपन के विषय में पूछने पर निगम साहब ने बताया-'मुझे भरोसा है, स्थानांतरित हो उपाध्यायजी किसी दिन पुनः इसी शहर में आएंगे।' इस कथित 'पागलपन' का कोई जवाब, कोई तर्क है?

कवि विजयकुमार एक मीटिंग के सिलसिले में दूसरे शहर गए थे। वहां वे दिनभर व्यस्त रहे। शाम को लौटने हुए सहसा ध्यान आया, ड्राइवर ने सुबह से कुछ खाया या नहीं? जानते हैं, चालक कभी गाड़ी छोड़कर नहीं जाता। मालूम होने पर कि ड्राइवर भूखा है, विजयजी ने तत्काल कार रुकवाई, खुद उतर पड़े और ड्राईवर को कहा, तुम शार्टकट से अपने घर पहुंचो और खाना खाओ। कार कल सुबह बंगले पर ले आना। बाद में विजय जी किसी के वाहन से अपने निवास पंहुचे। इसके ठीक विपरीत यह घटना। हम पांच-छह मित्र हिमाचल की यात्रा से लौट रहे थे, मेटाडोर में। ड्राइवर सुबह से गाड़ी रिपेयर करवाने चला गया था। उसके आते ही उसने हमारा सामान गाड़ी में लादा और हमारे जल्दी मचाने पर चल पड़ा। रास्ते में मैंने अपने एक साथी से कहा, 'शायद ड्राइवर ने खाना भी नहीं खाया।' साथी ने जो कहा, उससे उसे तो शर्म महसूस नहीं हुई, पर मेरा सिर शर्म से झुक गया। उसने कहा-'ड्राइवर ने खाना खाया या नहीं, यह हमारा सरदर्द नहीं है।' यह सब लिखने का उद्देश्य यह है कि जीवन की इन झलकियों से कुछ अच्छा करने, समाज के प्रति अपने दायित्व का बोध होने और जीवन के विषम क्षणों में दृढ़ रहने की प्रेरणा मिल सके।

(अहा जिन्दगी से साभार)

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़:- 21 मार्च को श्रीमान जी ने ईतवार की सभा करवाई जिसमें बताया कि देव समाज में आकर और लाभ उठाकर भी कुछ समय बाद विकास रुक जाता है। मनुष्य को अपने भीतर की शक्तियों को जानने की इच्छा ही नहीं पैदा होती। सत्संग की पूरी कीमत नहीं जागती। मनुष्य की सुरक्षा सत्संग में है।

मोगा:- शाम तक श्रीमान जी ने मोगा पहुंच कर एक परिवार को लेकर सभा करवाई। सभापति जी ने बताया कि धर्म का सम्बन्ध हमारे आत्मा से है। आत्मा का ज्ञान ही धर्म का ज्ञान है। हमें सुख लालसाएं चलाती हैं। हम अपने आप उनसे नहीं बच सकते हैं। अधिकारी होने पर हमें परम पू० भगवान देवात्मा की ज्योति ही इन लालसाओं को दिखाती है, और उनकी घृणा शक्ति उनसे बचाती है। इसलिए गुरु की ज्योति और शक्ति की नितान्त अवश्यकता है। तीन परिवार इस सभा में शामिल हुए और प्रभावित हुए और आगे से भी सभा सुनने की इच्छा प्रगट की।

22 मार्च को श्रीमान जी मोगा से कल्याण पंहुचे, वहां पर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के साथ प्रचार दौरे पर श्री अकबरपुर जाने की योजना बनाई। यहां से श्रीमान जी गोनियाना पहुंचे। वहां कुलदीप जी, ज्ञान चन्द जी वा हरिन्द्र सिंह जी को मिले।

पदमपुर :- 23 मार्च को भटिंडा से श्रीमान जी पदमपुर पहुंचे। रात को एक सभा रखी गई। मोगा से श्रीमान अवतार सिंह जी भी पदमपुर पहुंच गए। रात को एक सभा रखी गई। सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हम अपने वातावरण के कैदी हैं। हमारे विचार वा धर्म जैसा वातावरण हमें देता है, उसे ही हम ठीक मानते हैं। सब अपने 2 ईष्ट वा धर्म को ठीक मानते हैं, चाहे एक दूसरे के विरोधी विचार ही क्यों न हों। पर सब ठीक नहीं हो सकते। जो कुछ विज्ञान के अुनसार है, वही ठीक हो सकता है। गुरू महाराज ने यह परख़ की तकड़ी दी है। दूसरी हालत हानिकारक है।

24 मार्च 8.30 बजे सुबह:-यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, जिसमें बताया गया कि मनुष्य के हृदय में अन्धेरा है, उसे अच्छे इन्सानों की पहचान नहीं, गुरू की पहचान तो कैसे हो सकती है। उदाहरणों द्वारा बताया कि अन्धेरा मनुष्य को कैसे गुमराह करता है। स्थानीय कुछ जनों की महानता पेश की गई। उन्हें बस्ती वाले ठीक रूप से नहीं देख सकते। इस हृदय के अन्धेरे में गुणधारियों का अनादर हो जाता है। गुरु महाराज को मानकर भी, हम उनके रूप को नहीं देख सकते और उनका अनादर हो जाता है। गुरू की रोशनी में ही दूसरों की महानता वा अपनी हीनता नज़र आती है। उनकी रोशनी के बिना गुरू को पहचानना कर्मचारियों के लिए भी कठिन ही नहीं असम्भव है।

रात 8.30 बजे सभा की गई। इस सभा में भी मण्डी गजपुर से दो जन आ गए, और भी 4-5 नये जन आए। सभा में बताया गया कि मनुष्य जगह जगह दुखों और बर्बादी में फंसा हुआ है। धर्म बहुत हैं, पाठ, साधन, जगराते बहुत हैं, परन्तु मानवता के दुख और बर्बादी दिन रात बढ़ रही है। मनुष्य के भीतर सुख लालसाएं हैं, जब तक उनका बर्बादी करने वाला रूप नज़र नहीं आता, दुख बढ़ते ही जाएंगें। किसी पूजा पाठ से कम नहीं होंगे। देवात्मा गुरू में वह क्षमता है कि वह मनुष्य की इन सुख लालसाओं को दिखाकर उनसे निकलने के मार्ग पर चलाते हैं। मरती हुई रूहों के शफागर हैं। ठोस उदाहरणों द्वारा यह सत्य समझाया

गया।

25 मार्च की सुबह सभा की गई। उसमें बताया गया कि ज़हर त्यागो, अमृत पाओ। इसकी व्याख्या करते हुए बताया कि नशे ज़हर हैं, मांसाहार ज़हर है, जीव हत्या ज़हर है। बदचलनी, नीच कर्म ज़हर हैं। बेईमानी, रिश्वत ज़हर हैं, अवगुण चिन्तन ज़हर है, गुण चिन्तन अमृत है। स्वार्थ ज़हर है, पर सेवा अमृत है। अपने काम धन्धों में ही व्यस्त रहना ज़हर है। सेवा सत्संग के लिए समय निकालना अमृत है। अच्छी सोच अमृत है। गन्दी सोच ज़हर है। ज़हर घातक है- अमृत जीवन दायक है।

रात 8.30 बजे:- दूसरी सभा हुई, एक जन गंगानगर से और एक गजसिंहपुरा से आकर शामिल हुए। मनुष्य के भीतर नीच अनुराग बढ़ रहे हैं, वह हानि कर रहे हैं, केवल देवात्मा मनुष्य को उसके भयानक नीच अनुराग और उनकी हानियां दिखा सकते हैं। गरु महाराज में नीच सुख अनुरागों के प्रति अदभुत घृणा शक्तियां हैं वह मनुष्य को इनसे बचाने की क्षमता रखती हैं। सच्ची उदाहरणों द्वारा इन शक्तियों के कार्य को समझाया गया।

26 मार्च सुबह 8.30 बजे:-इस सभा में पानीपत से नरिन्द्र जी चौधरी जी और जगदीष जी भी रात को पहुंच गए थे। सभा में बताया गया कि धर्म प्राप्ति के लिए अधर्म और पाप को छोड़ना अवश्यक है। पाप, पाप शक्तियों से पैदा होता है और धर्म, धर्म की शक्तियों से। किसी के किए उपकार को जानना अर्थात् शुक्रगुज़ारी धर्म की शक्ति है। हम सब अपने उपकारियों की मेहरबानियों से ही हैं। उपकारों को देखना, उपकारियों के काम आना और ऐसा करके खुशी प्राप्त करना कृतज्ञता है। सभापति जी ने बताया कि गुरू महाराज हम अध्यात्मिक रूप से मरतों को बचाते हैं। हमें उपकारी दिखाए हैं, माता पिता, डाक्टर, शिक्षक आदि उपकारी दिखाए हैं। उनकी सेवा में लगाया है। सभापति जी ने कृतज्ञ जनों के उदाहरण पेश किए। हमारे पशुवत जीवन को स्वर्गिय जीवन बनाया है। ऐसे सत्गुरू की महिमा का वर्णन नही हो सकता। बड़ा सुन्दर वा स्वर्गिय वातावरण बन रहा था। सबके हृदय गुरू के चरणों में झुक रहे थे।

रात को फिर एक सभा की गई। इस सभा में गंगानगर से गोपाल जी भी आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि नेक और अच्छा इन्सान अपने व्यवहारों से पहचाना जाता है। उच्च भावों से उच्च व्यवहार होते हैं और नीच भावों से नीच व्यवहार होते हैं। गुरू महाराज सम्बन्धों में उच्च व्यवहार संचार करके उन्हें उच्च, मीठे और सुमेल पूर्ण बनाते हैं। गुरु महाराज अच्छे और नेक पुत्र, नेक पति, नेक भाई, नेक अफसर वा मताहत, नेक पड़ोसी पैदा करते हैं। गुरू महाराज ने अपने प्रभावों के द्वारा अति सुन्दर, श्रद्धावान सन्तानें पैदा की हैं, अच्छे भाई वा पति बनाए हैं। ऐसे प्रभावों की महिमा को जानकर हाजरीन बहुत प्रभवित हुए।

27 मार्च को सुबह 8.30 बजे एक सभा की गई। भजन गाने के बाद पहले पूछा गया कि धर्म की क्यों आवश्यकता है?, इससे क्या लेना है? और यह क्या काम आएगा? इसका जवाब देते हुए बताया गया कि हम जिंदा रहना चाहते हैं, दुखी होना नहीं चाहते, मरना नहीं चाहते। सब जीव-धारियों की यह मूल इच्छा है। हमें जिंदा हमारी जीवनी शक्ति वा आत्मा रखती है। आत्मा को बचाने के नियम पूरे करना और जीने के नियमों का पूरा करना ही धर्म है अर्थात दुखी होने से बचने के नियमों को पूरा करना ही धर्म है। आत्मा दूसरों के लिए निष्काम सेवा के बहुत से साधन पूरे करने से आत्मा जीवित और उन्नत होती है। यह जोश पूर्ण सभा ने सब को प्रभावित किया।

रात को 8.30 बजे फिर सभा की गई। इसमें गजसिंह वाला से 2-3 नये जन आकर शामिल हुए।

सभा में बताया गया कि जैसे पुराने ज़माने में बिमारियां फैली होती थी। लाखों इन्सान मर जाते थे, किसी की पेश नहीं जाती थी। बहुत मुश्किल से सांईसदानें ने बिमारियों के कारण खोजे और ईलाज ढूंड कर मरते हुए इन्सानों को बचाया। पाठ, पूजा, नमाज, रोज़े कुछ नहीं कर सके थे। उनका कोई ईलाज वह नहीं कर सके थे। इसी प्रकार रूहें मर रही हैं, यह दृष्य भी किसी को दिखाई नहीं दिया। गुरू महाराज ने यह दर्दनाक मंजिर देखा और फरमाया कि सुखों के ईश्क ही रूहों के रोग हैं। वह अपनी ज्योति में यह रोग मनुष्यों को दिखाते हैं और उनसे बचने के मार्ग पर डालते हैं। वह मरती हुई रूहों को बचा रहे हैं। इन्सान किस प्रकार नीच अनुरागों से मुक्त होकर सुखमय ज़िन्दगी जीने के योग्य हुए हैं- उसकी सच्ची उदाहरणें बताई गई। यह सभा बहुत प्रभावदायक रही।

<u>28 मार्च सुबह की सभा</u> आखिरी सभा थी। इसमें बताया कि नेचर ने एक चीज की Monopoly विशेष अस्तित्वों को दी है। मुंह दिखाने का काम शीशा ही कर सकता है। आक्सीजन देने का काम हरियाली ही कर सकती है। पानी आक्सीजन वा हाईड्रोजन ही बना सकते हैं। मनुष्य सब ग़ल्तियों के पुतले हैं। अपनी ग़ल्ती, अपनी नीचता कभी मनुष्य स्वंय नहीं देख सकता और न ही उससे निकल सकता है। यह काम केवल सत्य और शुभ अनुरागी ही अपने प्रभावों से करने की समर्थ्य रखते हैं। सत्गुरु ने कैसे अपराधी जनों को बचाकर उन्हें हितकर जीव बनाया है, उसकी सच्ची घटनाएं बताई गई। हाजरीन बहुत प्रभावित हो रहे थे।

एक जन इन प्रभावों में आकर जो चुंगी टैक्स न देकर जो कमाई कर रहा था, उस बुराई को बुरा समझ और महसूस करने के लिए मजबूर हो गए। वह अपने व्यवसाय को ही बदलने की इच्छा बता रहा था और पाप भी छोड़ने की इच्छा ज़ाहिर की। एक मास्टर साहिब ने भी सभा से लाभ उठाया। 805 रु० दान प्राप्त हुए। कुछ सभाओं की खुशख़बरी दैनिक अख़बारों में छपती रही। पत्रकार भी लाभ उठाते रहे। यहां पर 6 दिन का प्रोग्राम काफी सफल रहा।

गंगानगर:- 28 मार्च को पदमपुर से 5 धर्म सम्बन्धी यहां पहुंच गए। यह सभा 8.30 बजे रात को श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि अच्छा और नेक जीवन ही धर्म का जीवन है। अच्छी संगत, अच्छी सोसाईटी के बिना अच्छा बनना असम्भव है।

प्रभाव मनुष्य को अपने रूप में ढालते हैं, अच्छे प्रभाव अच्छा बनाते हैं और बुरे प्रभाव बुरा बनाते हैं। एक हैडमास्टर डाकुओं के साथ सम्बन्ध रखकर डाकू बन गया और डाकुओं के साथ ही पुलीस की गोली से मारा गया। गुरू महाराज ने अपने प्रभावों से निराली सत्संग पैदा की है, जो अपराधी जनों को नेक और सेवाकारी बना देती है। श्रीमान नेत राम जी बहुत नीच जीवन जी रहे थे परन्तु देव प्रभावों की संगत ने उन्हें ऋृषि का रूप दे दिया। इस संगत से जो भी जुड़ता है, उसका भला होना अवश्यक है।

<u>29 मार्च सुबह 8.30 बजे</u>:- इसमें बताया गया कि ईमानदारी, पवित्रता बिना कोई धर्म नहीं। धर्मवान बनने के लिए पहले हृदय को नम्र और सरस करने की अवश्यकता है। जैसे कपड़ा रंगने के लिए पानी में भिगोना अवश्यक है, उसी प्रकार हृदय को भी नम्र करने की अवश्यकता है। इसके लिए अपने से नेक, अपने से महान जनों के आगे शीश झुकाया जाए, जितना हृदय किसी के आगे झुकता है, उतना ही नम्र होता है, जो किसी की अच्छाई वा महानता के आगे झुक नहीं सकता, वह कभी धर्मवान नहीं हो सकता। वह शरीफ तो हो सकता है, परन्तु उच्च नहीं । सभापति जी ने कितने ही महान जनों के गुण बताकर उनके आगे शीश झुकाया और बताया कि इन महान

हस्तियों के आगे झुक झुक कर उन्होंने लाभ उठाया है।

रात को 8.30 फिर सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनुष्य को दुखी करने वाला, बिमार करने वाला और कोई नहीं, उसके अपने नीच सुख अनुराग हैं। प्रत्येक मनुष्य नीच सुख अनुरागी है। उनसे वह अन्धकार में रहता है और दुख और हानियां सहता है। अपने भीतर के नीच सुख अनुराग हम स्वंय नहीं देख सकते। गुरू की रोशनी में उनका भयानक रूप नज़र आता है, उनकी शक्ति उनसे निकलने की योग्यता प्रदान करती है। नीच अनुरागों से किसी सीमा तक बचे हुए जनों की घटनाएं बताई गई जो इसकी साक्षी हैं। एक नौजवान जो 4 - 5 महीनों से शराब की प्रतिज्ञा करके बचा हुआ था। उसने आगे भी बचा रहने की प्रतिज्ञा की।

30 मार्च सुबह फिर एक सभा की गई। सभा में बताया गया कि नेचर में नियम काम करते हैं। सेहत के नियम समझाए, फिर धर्म प्राप्ति के नियम बताए, इसलिए पाप रहित आदमियों की संगत करते रहना चाहिए। बार बार संगत में आए बिना अधर्म पीछा नहीं छोड़ता। अच्छी पुस्तकों की संगत भी लाभदायक है। अच्छी पुस्तकों से भी अच्छे प्रभाव मिलते हैं। हाजरीन बहुत उत्साहित अनुभव कर रहे थे। बाहर से आए जनों की डा० मुनशा सिंह जी, गोपाल जी और चमन जी ने बहुत सेवा की। सहायकारियों की कृपा से यहां का संग्राम बहुत उत्साह - प्रद रहा।

(एक हाज़रीन)

भगवान देवात्मा फरमाते हैं: -

✦ यदि किसी उच्च लक्ष्य के पूरा करने के लिए तुम अपनी ओर से पूरा ज़ोर लगाओ, तो नेचर तुम्हारी सहायता करेगी। जिस विभाग में भी तुम्हारे भीतर सेवाकारी बनने की योग्यता हो, उसी में काम करने के लिए तैय्यार हो जाओ और ब्रती कर्मचारी बन जाओ। ब्रती कर्मचारी बनना अपना बहुत बड़ा उच्च अधिकार समझो। उस अधिकार की प्राप्ति में घमंड भाव जो विशेष रूप से विघ्नकारी बनता है, वह किसी तरह नष्ट हों।

✦ "धर्म प्रचार का काम वही लोग कर सकते हैं, जो आत्मा के विषय में सत्य ज्ञान दे सकते हों, उन्हें उच्च गतियों में ढाल सकते हों। जो जन इस प्रकार का कोई अमली काम नहीं कर सकते, वह हमारे किस काम के कर्मचारी?

✦ क्या तुम्हें यह सचाई नज़र आती है कि यदि तुम सचाई और भलाई का साथ दोगे, तो सारी नेचर का विकासकारी विभाग तुम्हारी पुश्तो पनाह होगा, देवात्मा और सारी देव समाज तुम्हारी पुश्तो पनाह होगी? यदि एक सिपाही पैसे के पीछे अपनी जान तक दे देता है, तो तुम धर्म की खातिर क्यों ऐसा नहीं कर सकते? तुम्हें चाहिए कि धर्म जीवन से अपने आत्मा को बलवान बनाओ। - - - नाम इज्ज़त के लिए जो काम करेगा, उसमें आत्मिक बल पैदा नहीं होगा।

पेज 2 का बाकी

तुम जब तक हमारे अधीन हो, तब तक तुम्हें हमारी अधीनता में चलना होगा, वरना भाग जाना होगा। हमारी बहुत सी ज़िंदगी अनाधिकारी जनों पर निष्फल गई है, बाक़ी का समय हम नए सिरे से काम करने में लगाना चाहते हैं। तुम समाज के हितकर अंग बनना सीखो, तुम स्वेच्छाकारी रह कर समाज के लिए हितकर अंग नहीं बन सकते। तुम भी अन्य लाखों जनों की न्याई ही रहते हो। क्या लाखों और करोड़ों मनुष्यों से भरी हुई दुनिया में कोई एक जन भी ऐसा है जिसमें अंह का मोह नीच राग न हो? सब ही न्यूनाधिक इस नीच राग में फंसे हुए हैं, जिसके कारण आत्माओं का कुछ बनने में नहीं आता। इसलिए इस महा हानिकारक नीच राग से उद्धार लाभ करने की आवश्यकता है। श्रीमान् जी में यह बहुत अच्छी बात है कि वह अपनी गलती के लिए दंड लेते हैं। इससे पता लगता है कि वह अपनी अवस्था में बेहतरी लाना चाहते हैं और आगे के लिए ऐसी ग़लती से बचना चाहते हैं। हम यह जानते हैं कि जैसे सब जन बी. ऐ. नहीं बन सकते, वैसे ही यह सब जन आत्मज्ञान नहीं पा सकते और आत्मा का कल्याण लाभ नहीं कर सकते। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या तुम उसके लिए कुछ यत्न भी करते हो या कि यूं ही हिम्मत हार कर बैठ जाते हो?

श्रीमती हितलता दयोल चले गए

बहुत शोक है कि श्रीमति हितलता दयोल पुत्री फरिश्ता तहसीलदार सरदार सावन सिंह एवं पत्नी डा॰ G.S. दयोल अपनी जीवन यात्रा पूरी करके 91 साल की उमर में पिछले महीने परलोक चले गऐ। सरदार सावन सिंह जी एवं उनका परिवार देव समाज के इतिहास में न मिटने वाला अंग रहा है। हितलता जी देवसमाज के लिए पूर्ण सम्मान रखती थीं। हितलता जी एवं उनके पति ने अपनी नेक कमाई से कई लाख रुपये समाज में दान दिये। हम उनकी परलोक में आत्मिक शान्ति की कामना करते हैं।

(मन्त्री देव धर्म)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts